श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

✺ बड़ा कयामतनामा ✺

नोट—श्री देवचन्द्रजी महाराज ने श्री इन्द्रावतीजी को कहा था कि खेल में शाकुंडल और शाकुमार परमधाम की दो सखियां राजघरानों में आई हैं। ऐसा उनकी परआतम से पता चलता है, क्योंकि वह परमधाम में हंस रही हैं। उनको जगाकर तुम्हें लाना है। उनमें एक सखी शाकुंडल महाराजा छत्रसाल के तन में बैठी है। दूसरी शाकुमार औरंगजेब के तन में लीला कर रही है। श्री देवचन्द्रजी महाराज ने नाम नहीं बताए थे। बाद में श्री प्राणनाथजी महाराज ने उनको पहचाना।

खास उमतसों कहियो जाई, उठो मोमिनों कयामत आई।
केहेतीहों माफक कुरान, तुमारे आगे करों बयान।। १ ।।

हे शाकुंडल (महाराजा छत्रसालजी)! खास उम्मत जो औरंगजेब बादशाह है, उससे जाकर कहो कि कयामत के निशान जाहिर हो गए हैं। उनको कुरान के अनुसार तुम्हारे लिए बता रही हूं।

जो कोई खास उमत सिरदार, खड़े रहो होए हुसियार।
वसीयत नामे देवे साख, अग्यारैं सदीं होसी बेबाक।। २ ।।

ब्रह्मसृष्टियों में जो भी सिरदार सखियां हैं, वह सब सावचेत (सावधान) होकर जागृत हो जाओ। मक्का मदीना से वसीयतनामे इस बात की गवाही देते हैं कि ग्यारहवीं सदी में सबका न्याय कर देंगे।

बरकत दुनियां और कुरान, और फकीरों की मेहेरबान।
ए दरगाह से आया बयान, जबराईल ले जासी अपने मकान।। ३ ।।

वसीयतनामे में लिखा है कि मक्का मदीने से दुनियां की बरकत उठ गई और फकीर की शफकत (कृपा) उठ गई। वहां से साफ लिखकर आया है कि जबराईल फरिश्ता हिन्दुस्तान में जहां इमाम मेंहेंदी प्रगट हुए हैं, पन्नाजी में ले गए हैं।

और तिन दिन होसी अंधाधुंध, द्वार तोबा के होसी बंध।
कह्या होसी और रवेस, तब कोई किसी का नाहीं खेस।। ४ ।।

अब यहां मक्का मदीने में अन्धाधुन्ध का राज हो गया है जो जिसके मन में आता है वह वही करता है। तोबा के दरवाजे भी बन्द हो गए हैं। जैसा कुरान में कहा था, उसी के अनुसार सब जमाना बदल गया है। अब कोई किसी का मददगार नहीं रह गया।

Nijanand App

अब कहो जी बाकी क्या रह्या, निसान कयामत का जाहेर कह्या।
पातसाही ईसा बरस चालीस, लिख्या सिपारे अठाईस।।५ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मक्का मदीने में अब रह क्या गया है? कयामत के सभी निशान जाहिर हो गए हैं। कुरान के अट्ठाइसवें सिपारे में लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह चालीस वर्ष तक बादशाही करेंगे। ईसा रूह अल्लाह की बादशाही ग्यारहवीं के दस, बारहवीं के तीस अर्थात् सम्वत् १७३५ से १७७५ तक हो गए। इसमें सोलह वर्ष तक स्वामीजी के तन से और २४ वर्ष महाराजा छत्रसालजी के तन से बादशाही हुई। इस समय में महाराज छत्रसालजी ने जगह-जगह प्रचार कराया।

क्या हिंदू क्या मुसलमान, सब एक ठौर ल्यावें ईमान।
सो क्या होसी उठे कुरान, ए विचार देखो दिल आन।।६ ।।

अब क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, सभी एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) पर यकीन लाएंगे। जरा दिल से विचार करके देखो। कुरान के उठ जाने का अर्थ क्या है? इसका अर्थ यही है कि कुरान के छिपे रहस्य इमाम मेंहेंदी खोलेंगे। वह जाहिर हो गए।

नव सै नब्बे हुए वितीत, तब हजरत ईसा आए इत।
सो लिख्या अग्यारहें सिपारे माहें, मैं खिलाफ बात कहोंगी नाहें।।७ ।।

रसूल साहब के नौ सौ नब्बे वर्ष के बाद रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी महाराज सम्वत् १६३८ में प्रगट हुए। यह कुरान के ग्यारहवें सिपारे में लिखा है। मैं कुरान के खिलाफ क्यों कहूंगी?

रूहअल्ला पेहेनें जामें दोए, ए लिख्या कुरान में सोई होए।
ए लिख्या छठे सिपारे माहें, धोखे वाला जाए देखे तांहें।।८ ।।

रूहअल्लाह दो तनों से लीला करेंगे, ऐसा कुरान में लिखा है। वही हो रहा है। यह कुरान के छठे सिपारे में लिखा है। जिसे संशय हो देख सकता है।

ए जो बरस ईसा की कही, तिनकी तफसीर कर देऊं सही।
दस अग्यारहीं बारहीं के तीस, ईसा पातसाही बरस चालीस।।९ ।।

ईसा रूह अल्लाह की चालीस वर्ष की बादशाही बताई है। उसका भी खुलासा कर देता हूं। ग्यारहवीं सदी के दस वर्ष सम्वत् १७३५ से १७४५—बारहवीं के तीस सम्वत् १७४५ से १७७५ तक—यह ईसा के चालीस वर्ष की बादशाही है।

सत्तर बरस और जो रहे, सो तो पुल-सरात के कहे।
मोमिन चलें बिजली की न्यात, मुतकी भी घोड़े की भांत।।१० ।।

इसके आगे सत्तर साल पुलसरात के कहे हैं, अर्थात् सम्वत् १७७५ से १८४५ तक कर्मकाण्ड पर आधारित पुलसरात का समय है। इस समय में मोमिन बिजली की तरह जागेंगे। ईश्वरीसृष्टि की घोड़े की तरह चाल होगी। घोड़े की चाल का अर्थ है कि वह निराकार को कूदकर पार हो जाएंगी।

और जो जाहेरी उमत रही, दस बिध तिनको दोजख कही।
पुल-सरात कही खांडे की धार, गिरे कटे नहीं पावे पार।।११ ।।

जो जाहेरी जमात जीवसृष्टि है, कर्मकाण्ड करती है। उसे दस तरह की दोजख की अग्नि में जलना कहा है। यह कर्मकाण्ड का रास्ता ऐसा कठिन है, जैसा तलवार की धार पर चलना कठिन होता है। जिस

Nijanand App

पर चलने से तलवार की धार पैर काट देती है। कोई आगे कैसे चले? इस प्रकार कर्मकाण्ड पर चलने वाले पार नहीं जा सकते।

अमेतसालून में कह्या ए, ए जाए देखो दीदे दिलके।
ए जाहेर कह्या बयान, पर दिल के अंधे न सके पेहेचान।। १२ ।।

इस तरह की दोजख का ब्यान कुरान के तीसवें सिपारे की पहली आमेत सालून सूरत में लिखा है। इसको आत्मदृष्टि से देखो तो समझ में आएगा। इस स्पष्ट लिखे को भी शरीयत (कर्मकाण्ड) पर चलने वाले जीव (अन्धे) नहीं देख पाते।

दसहीं ईसा अग्यारहीं इमाम, बारहीं सदी फजर तमाम।
ए लिखी बीच सिपारे आम, तीसमा सिपारा जाको नाम।। १३ ।।

कुरान के तीसवें आम सिपारा में लिखा है कि दसवीं सदी में ईसा रूह अल्लाह आएंगे। ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहेंदी प्रगट होंगे और ग्यारहवीं सदी में कुलजम सरूप की वाणी मारफत सागर जाहिर होगी। इनके अनुसार दसवीं सदी सम्वत् १६३८ में श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) प्रगटे। ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज मेहराज ठाकुर के तन में प्रगट हुए और बारहवीं सदी १७४८ तक कुलजम सरूप की पूरी वाणी जाहिर हो गई।

आए ईसा महंमद और इमाम, सब कोई आए करो सलाम।
पर न देखो आंखों जाहेरी, दिल दीदे देखो चित्त धरी।। १४ ।।

अब श्री प्राणनाथजी महाराज के तन के अन्दर ईसा रूह अल्लाह, रसूल साहब और इमाम मेंहेंदी अर्थात् तीनों सूरतें बसरी, मलकी, हकी एक तन में विराजमान हैं। अब सब कोई आकर इनके दर्शन करो और सिजदा करो। इनके स्वरूप को जाहेरी आंखों से मत देखो, क्योंकि तन तो आदमी जैसा ही है। इनके स्वरूप को आत्मदृष्टि से चित्त लगाकर देखो।

अजाजीलें देख्या वजूद, तो आदम को न किया सजूद।
सिजदे किए तिनें बेहद, सो सारेही हुए रद।। १५ ।।

अजाजील फरिश्ता ने आद आदम के शरीर को देखा। वह यह भी भूल गया कि खुदा ने इस आदम के अन्दर अपनी रूह को बिठा दिया है और इसलिए आदम के ऊपर सिजदा नहीं किया। खुदा का हुकम न मानने का उस पर गुनाह लगा। उसने जो पहले सिजदे किए थे, वह रद्द हो गए।

जो उनने देख्या आकार, तो लगी लानत और हुआ खुआर।
तब अजाजीलें मांग्या वचन, के आदम मेरा हुआ दुस्मन।। १६ ।।

अजाजील ने आदम के शरीर को देखा और रूह को नहीं पहचाना, इसलिए उसको लानत लगी और उसकी दुर्दशा हुई। तब अजाजील ने पारब्रह्म से प्रार्थना की कि यह आदम मेरा दुश्मन बन गया है। मैंने आपकी बहुत बन्दगी की है, इसलिए मेरी बन्दगी का बदला मिलना चाहिए।

इनकी औलादकी मारों राह, सबके दिल पर होऊं पातसाह।
आदम अजाजीलसों ऐसी भई, आठमें सिपारे में जाहेर कही।। १७ ।।

मैं इस आदम की औलाद (हर आदमी) के अन्दर बैठकर उसे सच्चे रास्ते से भटका दूंगा और इस तरह से उनके दिलों में बैठकर उन पर हुकूमत करूंगा। आदम अजाजील की यह बात कुरान के अन्दर आठवें सिपारे में जाहिर लिखी है।

Nijanand App

फेर तुम लेत वाही की अकल, पर क्या करो तुम जो वाही की नसल।
तुम दज्जाल बाहेर ढूंढ़त, वह दिल पर बैठा ले लानत।। १८ ।।

हे संसार के लोगो! तुम आदम की ही औलाद हो। अजाजील की ही बुद्धि के अनुसार दज्जाल को बाहर ढूंढ़ रहे हो। वह तो लानत लगने के बाद तुम्हारे अन्दर बैठकर तुम्हें भी परमात्मा की राह से भटका रहा है।

ऊपर माएने न होए पेहेचान, ए तुम सुनियो दिल के कान।
हमेसां आवत है ज्यों, अब भी फेर आए हैं त्यों।। १९ ।।

इन बातों को दिल से विचार करके ही पहचान सकोगे। ऊपर के मायने लेने से जानकारी नहीं होगी। हमेशा से हिन्दुओं के बीच अवतार होते आए हैं। अब भी उसी तरह से हिन्दुओं के बीच ईसा रूह अल्लाह देवचन्द्रजी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी प्रगट हुए हैं।

सब पैगंमर जहूद खिलके, विचार देखो दीदे दिलके।
ओ तो आए हिंदुओं दरम्यान, जिनको तुम केहेते कुफरान।। २० ।।

पहले भी सभी पैगम्बर यहूदियों में आए। यह तुम दिल से विचार करके देखो। इस बार भी हिन्दुओं के बीच आए हैं, जिनको तुम काफिर कहते हो।

तुम ढूंढ़ो अपने खिलके माहें, तामें तो साहेब आया नाहें।
जिनको तुम केहेते काफर जात, सो सबकी करसी सिफात।। २१ ।।

हे शरीयत के मुसलमानो! तुम अभी भी अपने बीच उनके आने का रास्ता देख रहे हो, परन्तु जिन हिन्दुओं को तुम काफिर कहते हो, अब वही तुम्हारी सिफारिश कर तुम्हें बहिश्तों में कायम करेंगे।

रब ना रखे किसीका गुमान, ओ तो गरीबो पर मेहेरबान।
परदा लिख्या जो हजरत के रूए पर, तिनकी क्या तुमको नहीं खबर।। २२ ।।

खुदा किसी का अहंकार नहीं रहने देते। उनकी मेहर तो सदा गरीबों पर होती है। कुरान और अंजील में लिखा है कि जब ईसा रूह अल्लाह दुबारा आएंगे, तो उनके मुंह पर परदा होगा। इसकी जानकारी क्या तुम्हें नहीं हुई?

परदा लिख्या वास्ते आवने हिंदुओं माहें, ए पढ़े इसारत समझत नाहें।
जो देखत हैं जेर जबर, सो हकीकत पावें क्यों कर।। २३ ।।

आखिर के समय जब रूह अल्लाह आएंगे तो उनके मुंह पर परदा होगा। इसका अर्थ यही है वह हिन्दुओं में आएंगे और तुम उन्हें पहचान न सकोगे, इसलिए तुम्हारे पढ़े-लिखे लोग इसको नहीं समझ पाते। जो भाषा को मात्राओं के रूप में देखते हैं, वह हकीकत के ज्ञान को कभी नहीं पा सकते।

ऐसी हिंदुओंकी कही सिफत, आखिर हिंदुओंमें मुलक नबुवत।
और आप हजरत रिसालत-पनाह, जहूद फकीरों में पातसाह।। २४ ।।

इस तरह से वक्त-ए-आखिरत को हिन्दुओं की बड़ी सिफत बताई है, क्योंकि हिन्दुओं के अन्दर ही ब्रह्मसृष्टियों का आना होगा। ब्रह्मसृष्टि ही कुरान में लिखे यहूदियों में फकीर होंगे और उन्हें उनके मालिक सिरदार खुद इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज अपनी शरण में लेंगे।

Nijanand App

पांचमें सिपारे में एह बयान, न मानो सो जाए देखो कुरान।
और हिंदवी किताबोंमें यों कही, बुध कलंकी आवेगा सही।। २५ ।।

यह हकीकत कुरान के पांचवें सिपारे में लिखी है। जिसको विश्वास न हो वह कुरान को जाकर देख ले। हिन्दुओं के धर्मग्रन्थों में भी लिखा है कि आखिर के समय विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार प्रगट होंगे।

सो आएके करसी एक रस, मसरक मगरब होसी बस।
कोई केहेसी क्या दोऊ होसी एक बेर, तिनका भी कर देऊं निबेर।। २६ ।।

वही आकर सबको एक रास्ते पर चलाएंगे। पूरब को मानने वाले हिन्दू और पच्छिम दिशा को मानने वाले मुसलमान दोनों ही इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अधीन होंगे। कोई पूछ सकता है कि विजियाभिनन्द बुधजी ईसा रूह अल्लाह और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी एक साथ आएंगे? तो उसका भी विवरण कर देता हूं।

ए इसारत खोले निज बुध, बिना हादी न पाइए सुध।
घोड़ेको लिख्या कलंकी कर, ताकी किनकों नहीं खबर।। २७ ।।

धर्मग्रन्थों की इन इशारतों को कुलजम सरूप की वाणी ही खोलेगी और श्री प्राणनाथजी के बिना इसकी जानकारी किसी को नहीं होगी। हिन्दू शास्त्रों में घोड़े को कलंकी कहा है, क्योंकि वह तीन पैर पर खड़ा है, अर्थात् अथर्ववेद का अर्थ कोई नहीं करता था। व्यासजी को वेदत्रयी कहते हैं। श्री प्राणनाथजी महाराज ही बुध के अवतार हैं। उन्होंने अथर्ववेद के अर्थ खोले। ज्ञान के घोड़े पर सवारी की। ज्ञान के घोड़े को निष्कलंक किया। इसकी जानकारी क्या तुममें किसी को नहीं है?

जोतिष कहे विजिया अभिनंद, सब कलिजुगको करसी निकंद।
अंजील कहे ईसा बुजरक, सो आएके करसी हक।। २८ ।।

ज्योतिषशास्त्र भी कहता है कि विजियाभिनन्द प्रगट होंगे और कलिजुग के प्रभाव को नष्ट कर देंगे। अंजील में लिखा है कि आखिर के वक्त में ईसा आएंगे और वही सबसे महान् होंगे और सत्य (धर्म) की स्थापना करेंगे।

जहूद कहें मूसा बड़ा होए, ताके हाथ छूटें सब कोए।
यों सारोंने रसम जुदी कर लई, सब बुजरकी धनीकी कही।। २९ ।।

यहूदी भी कहते हैं कि अन्त समय में मूसा पैगम्बर आएंगे और उनके हाथों से सबको अखण्ड मुक्ति मिलेगी। इस तरह से सभी ने अपने-अपने तरीके से लिखा है, परन्तु यह सभी साहेबी जुदा-जुदा ग्रन्थों में श्री प्राणनाथजी महाराज के लिए कही गई है। यही एक सारे जगत के मालिक हैं।

ओ उरझे जुदे नाम धर, रब आलमका आया आखिर।
अपनी अपनी में समझे सब, जुदा न रह्या कोई अब।। ३० ।।

दुनियां के सभी धर्म वाले अपने नामों में उलझे हुए हैं, जबकि सारे जगत के मालिक श्री प्राणनाथजी महाराज आ गए हैं। अब सभी लोग अपनी-अपनी भाषा और अपने-अपने ग्रन्थों से समझ जाएंगे। श्री प्राणनाथजी महाराज ने सबको उनकी भाषा और उनके ग्रन्थों से ही समझाया। इसलिए अब कोई जुदा नहीं रहेगा।

Nijanand App

सब किताबों दई साख, जुदे नाम जुदी लिखी भाख।
सत असत दोऊ जुदे किए, माया ब्रह्म चिन्हाएके दिए।। ३१ ।।

अब सभी धर्मग्रन्थ अपनी-अपनी भाषा में अपने-अपने अगुओं के नाम से गवाही दे रहे हैं। श्री प्राणनाथजी महाराज ने माया और ब्रह्म की पहचान करा दी है और सत्य और झूठ को अलग-अलग करके दिखा दिया है।

दोनों जहानमें थी उरझन, करमकांड सरीयत चलन।
करी हकीकत मारफत रोसन, साफ किए आसमान धरन।। ३२ ।।

हिन्दू और मुसलमान दोनों ही कर्मकाण्ड और शरीयत के नियमों में झगड़ा करते थे। श्री प्राणनाथजी महाराज ने हकीकत और मारफत की वाणी (कुलजम सरूप की वाणी) से हिन्दू-मुसलमान सबके संशय मिटा दिए।

ब्रह्मांडको भान्यो खिलाफ, सब जहान को कियो मिलाप।
ग्वाही खुदाकी खुदा देवे, करे बयान हुकम सिर लेवे।। ३३ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने संसार के सभी धर्मों के झगड़े मिटाए और उनको एक झण्डे के नीचे लाए। यह खुद खुदा हैं। हुकम की आड़ में अपनी गवाही स्वयं दे रहे हैं।

सब पूजसी साहेब सरत, कलाम अल्ला यों केहेवत।
ए लिख्या तीसरे सिपारे, खोले अर्स अजीमके द्वारे।। ३४ ।।

कुरान में लिखा है कि खुदा अपने किए वायदे के अनुसार आएंगे और सारी दुनियां उनकी पूजा करेगी। वह कुलजम सरूप की वाणी से परमधाम की पहचान करा देंगे। यह बात कुरान के तीसरे सिपारे में लिखी है।

लैलत-कदर के तीन तकरार, तीसरे फजर में कार गुजार।
रूहों फरिस्तों वजूद धरे, लैलत कदरके माहें उतरे।। ३५ ।।

कुरान में लैल तुल कदर की रात के तीन भाग बताए हैं। इस रात्रि में ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि परमधाम और अक्षरधाम से उतरी हैं। लैल तुल कदर का पहला भाग बृज लीला, दूसरा भाग रास और तीसरे भाग में कुलजम सरूप की वाणी से ज्ञान का सवेरा होगा और ब्रह्माण्ड को अखण्ड करने के सारे काम पूरे किए जाएंगे।

खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोऊ भई सिरदार।
हुकम दिया साहेबें इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ।। ३६ ।।

इसी तीसरे भाग में जागनी के ब्रह्माण्ड में सम्वत् १६६४ से १७४८ तक श्री राजजी महाराज की मेहर उतरी। १६६४ में श्री देवचन्द्रजी को भागवत के रहस्यों का पता लगने लगा। आखिर १७४८ में कुलजम सरूप की पूरी वाणी आई जिससे ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि सबसे श्रेष्ठ हैं, दुनियां वालों को इसकी पहचान हुई। श्री राजजी महाराज ने ब्रह्माण्ड को अखण्ड करने का पूरा काम इनके हाथ सौंपा, जिससे सारी दुनियां में इनकी शोभा हुई।

Nijanand App

यों केतिक ग्वाही देऊं कुरान, इन्ना इन्जुलना में एह बयान।
तीसरे तकरार की भई फजर, अग्यारैं सदी में देखो नजर।। ३७ ।।

कुरान की मैं कितनी गवाही दूं। इन्ना-इन्जुलना में मेहर उतरने की हकीकत लिखी है। लैल के तीसरे भाग जागनी की लीला में कुलजम सरूप के ज्ञान से ग्यारहवीं सदी में अज्ञानता का अन्धकार मिटकर सवेरा होगा।

और पेहेले सिपारेमें जो लिखी, सो तुम क्या नहीं देखी।
साहेदी कुंन की देवे जोए, खास उमत का कहिए सोए।। ३८ ।।

कुरान के पहले सिपारे में जो लिखा है वह क्या तुमने नहीं देखा? मूल-मिलावा में श्री राजजी महाराज ने इश्क रब्द के बाद कुंन शब्द कहकर संसार को बनाने का आदेश दिया। उस समय की श्री श्यामाजी महारानी और रूहें अब गवाही देते हैं। यही मोमिन हैं।

अब जो कोई होवे खास उमत, देवे ग्वाही सो होए साबित।
उड़ाए गफलत हो सावधान, छोड़ो पढ़ों का गुमान।। ३९ ।।

अब जो भी खास उम्मत मोमिनों में से हों, वह मूल-मिलावा की इस बात की गवाही दें। दुनियां के पढ़े-लिखे लोगों के अहंकार को तोड़कर उनकी भ्रान्तियां दूर करो और उनको सावचेत करो।

हकुल्यकीन और सुंनी जोए, पेहेले ईमान ल्यावेगा सोए।
पीछे जाहेर होसी साहेब, तब तो ईमान ल्यावेंगे सब।। ४० ।।

अब यह ब्रह्मसृष्टियां (मोमिन) ही यकीन वाले हैं। सुंनत जमात सुनकर ईमान लाने वाले कहलाते हैं। यही सबसे पहले इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज के ऊपर ईमान लाएंगे। कुलजम सरूप की वाणी से जब प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान हो जाएगी तो फिर सभी ईमान लाएंगे।

भिस्त दोजख जाहेर भई, नफा किसीको न देवे कोई।
ले हिरदे हादी के पाए, छत्रसाल यों कहे बजाए।। ४१ ।।

महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि श्री प्राणनाथजी की वाणी ने कयामत के सभी निशान जाहिर कर दिए हैं और अब दुनियां वालों को बहिश्त और दोजख की पहचान हो गई है। अब न्याय का दिन आ गया है और सबको अपनी करनी का फल मिलेगा। कोई किसी की मदद न कर सकेगा, इसलिए श्री प्राणनाथजी महाराज के चरणों में ध्यान लगाकर मैं सारे संसार को सावचेत (सावधान) कर रहा हूं।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ४१ ॥

एक तो कहे अल्ला कलाम, जाहेरी माएनों का नाहीं काम।
दूजे तो इसारत कही, इत हुज्जत काहूकी ना रही।। १ ।।

कुरान को अल्लाह की वाणी कहा है, इसलिए इसके जाहिरी मायने लेने से इसके रहस्य का पता नहीं चलेगा। कुरान में जो बातें कही हैं वह सब इशारतों में कही गई हैं जिनको रूहों (मोमिनों) के अतिरिक्त कोई नहीं कह सकता कि मैंने समझ लिया है।

तीसरे जंजीरों करी जिकर, पोहोंचे न चौदे तबकों की फिकर।
सोए परोवनी मोतियों माहें, खुदा बिन दावा किनका नाहें।। २ ।।

तीसरी खास बात यह है कि कुरान में अलग-अलग आयतों में अलग-अलग किस्सों के रूप में हकीकत कही है जो चौदह तबक की दुनियां वाले नहीं समझ सकते। इसे केवल खुदा ही जानता है, इसलिए उनकी इस वाणी को जिन्हें परमधाम के मोती कहा है, उनके दिल में बैठाना है।

Nijanand App